IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

सिंगरौली जिले में अपराध के नियंत्रण में पुलिस की भूमिका

नागेन्द्र प्रताप सिंह
शोधार्थी, शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा (म.प्र.)
डॉ. महानन्द द्विवेदी
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, शास. शहीद केदारनाथ महाविद्यालय मऊगंज, जिला रीवा (म.प्र.)

शोध–सारांशः

वर्तमान में पुलिस की भूमिका समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा अलग–अलग रूपों में प्रदर्शित की जाती है–बहुसंख्यक तथा अल्पसंख्यक समूह, शासक और शासित वर्ग, सम्पन्न, भूमिस्वामी और भूमिहीन श्रमिक, मिल मालिक व मजदूर, शोषक व शोषित वर्ग, धनी व निर्धन वर्ग आदि सभी वर्गों द्वारा पुलिस के स्वरूप की परिकल्पना विभिन्न तरीकों से की गई है जिसमें प्रत्येक वर्ग द्वारा प्रस्तुत परिकल्पना में उसका निजी दृष्टिकोण निहित होता है। कानून लागू करवाने वाली संस्था, सरकार की कार्यपालिका को मजबूती प्रदान करने वाली संस्था, नागरिकों की सुरक्षा, अधिकारों व स्वतंत्रता के संरक्षक, समाजसेवी संस्था, राजनैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला राजतंत्र आदि भूमिकाओं के रूप में पुलिस संस्था अपेक्षित है। स्वाधीन भारत में वास्तविक रूप में पुलिस की संरचना, कार्यप्रणाली, उपकरण, प्रशिक्षण, दर्शन तथा व्यवहार में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हो पाया है। साथ ही वास्तविक और अपेक्षित भूमिका के बीच बहुत अंतर है पुलिस को न ही समाज की नवीन चुनौतियों के समक्ष नवीन भूमिकाओं के निर्वहन के अनुरूप बनाने का प्रयत्न हो पाया है और न उनके कार्यकारी परिस्थितियों, मनोवृत्तियों, दर्शन तथा आवश्यक साधनों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन हो पाए हैं। यही कारण है कि पुलिस जनता के अपेक्षित भूमिका के निर्वहन में असमर्थ रही है, इन्हीं बिन्दुओं को इस शोध पत्र में शामिल करने का एक प्रयास है।

मुख्य शब्दः सिंगरौली, अपराध, नियंत्रण, पुलिस, कार्यप्रणाली, उपकरण प्रशिक्षण, व्यवहार, भूमिका, स्वतंत्रता, संरक्षक आदि।

संदर्भ स्रोत :–

[1]. Productve method in research cormell F G and Munroe walter S page 29 to 34

[2]. यंग श्रीमती पी.बी. समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण एवं शोध की प्रविधियां तथा पद्धतियां –डां गोयल बद्रिका प्रसाद पृ. 164

[3]. मोहर–सामाजिक सर्वेक्षण और अनुसंधान के मूल तत्व सत्यपाल सहेला पृ 237